डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराणा कॉलेज,

विषय- संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, चतुर्थ पत्र

Date 18/5/20

व्याकरण- नाटक (अभिज्ञानशाकुन्तल)

अभिज्ञान शाकुन्तल के चतुर्थ अंक का वैशिष्ट्य :-

अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक के विषय में संस्कृत साहित्य में निम्न उक्ति बहुत प्रसिद्ध है-

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला ।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोक चतुष्टयम् ।।

काव्यों में दृश्यकाव्य अर्थात् नाटक अत्यन्त रम्य होता है। तथा दृश्यकाव्यों में अभिज्ञानशाकुन्तल सर्वाधिक रमणीय है। उसमें भी चतुर्थ अंक उत्कृष्ट है तथा चतुर्थ अंक में भी चार श्लोक सर्वाधिक रमणीय है। इस उक्ति को हम निम्न बिन्दुओं के माध्यम से भलीभाँति समझ सकते हैं-

(1) काव्येषु नाटकं रम्यम् :-

मूलतः काव्य के दो रूप हैं- श्रव्यकाव्य और दृश्य काव्य। दृश्यकाव्य को ही 'रूपक' कहा गया है "तद्रूपारोपात्तु रूपकम्" (सा०द० प०6.1) रूपक के दस भेद हैं। इनमें से नाटक भी एक है। 'नाटक' को ही इन सबमें सर्वश्रेष्ठ माना गया है। क्योंकि इसी में नाटक सम्बन्धी सभी तत्वों अथवा अंगों का समावेश हो जाता है।

(2) तत्र रम्या शकुन्तला :-

नाटक में भी 'अभिज्ञानशाकुन्तल' नाटक सर्वश्रेष्ठ नाटक है। इसकी श्रेष्ठता को सभी आलोचकों ने स्वीकार किया है, क्योंकि नाटकीय तत्वों- नेता, वस्तु और रस के आधार पर सभी नाटकों की

परीक्षा किये जाने पर यह सर्वश्रेष्ठ ठहरता है। इसी में नायक का उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय चरित्र है। इसकी कथावस्तु कला की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है। रस परिपाक आदि की दृष्टि से भी यह नाटक सर्वोत्तम है।

(3) तत्रापि चतुर्थोऽङ्कः :-

अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक में भी चतुर्थ अंक ही सर्वश्रेष्ठ अंक है। इसका कारण है- इस अंक में करुण विप्रलम्भ भाव का चित्रण किया जाना। शकुन्तला की विदाई के समय समस्त तपोवन, वहाँ के ऋषि तपस्वीजन, पशुपक्षी, वृक्ष, लतायें आदि सभी शकुन्तला के वियोग में दुःखी हैं। ऐसे वियोग के समय हृदय में करुणभाव का जागृत हो जाना स्वाभाविक ही है। इसी भाव की विशिष्टता से ओत प्रोत होने के कारण इस अंक की सर्वोत्तमता स्वीकार की गई है। जब दर्शक इस अंक का अभिनय देखते हैं, तो वे अपने आपको रोक नहीं पाते हैं तथा करुण विप्रलम्भ के भाव में बहने लग जाते हैं।

(4) तत्र श्लोकचतुष्टयम् :-

चतुर्थ अंक के प्रायः सभी दृश्य अत्यधिक मार्मिक तथा प्रभावोत्पादक हैं। किन्तु निम्नलिखित चार पद्यों को विद्वानों ने अति प्रभावोत्पादक और मार्मिक होने से सर्वश्रेष्ठ माना है। उक्त चार श्लोकों में षष्ठ श्लोक को सर्वोत्तम माना गया है।

→ यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
------ तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः ।। (4.6)

प्रस्तुत श्लोक सर्वोत्तम इसलिए है क्योंकि इसमें करुण-विप्रलम्भ भाव का सर्वोत्तम प्रवाह विद्यमान है। इसमें महर्षि कण्व के शकुन्तला की विदाई के विचार से द्रवित एवं करुण भाव को प्राप्त हुए हृदय की मार्मिक झांकी है। कवि कालिदास ने वन में रहने वाले ऋषि के मुँह से जो उद्गार कन्या के विदाई के अवसर पर कहलवाये हैं, वे शाश्वत महत्त्व रखने वाले हैं। महर्षि कण्व का यह कथन कि वन में रहने वाले मुझ जैसे वैरागी, आश्रमवासी को इतनी व्यथा व विकलता हो रही है, तब भला गृहस्थों की कन्या विदा करते समय क्या दशा होती होगी।

चार श्लोकों में से द्वितीय श्रेष्ठ श्लोक शुश्रूषस्व गुरून्० (4.18), तृतीय श्लोक अस्मान् साधु विचिन्त्य० (4.17) तथा चतुर्थ श्लोक पातुं न प्रथमम्० (4.9) है।

उपर्युक्त श्लोकों में कण्व द्वारा दिया गया उपदेश शाश्वत महत्त्व रखने वाला है। वनवासी होते हुए भी वे लौकिक व्यवहार के ज्ञाता थे - यह तथ्य उनके उपदेश से प्रमाणित हो जाता है।

उपर्युक्त चार श्लोकों के विषय में ही कहा गया है - "तत्र श्लोकचतुष्टयम्"। इसीलिए यह भी कहा गया है- 'कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञान-शाकुन्तलम्। इति ॥

Scanned with CamScanner